कविवर पंडित संतलालजी कृत

चतुर्थ पूजा

64 गुण सहित

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

: मधुर स्वर :

पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

ऊरध अधो सु रेफ सबिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्ग्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर।।
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाग को।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्... अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्। ..
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।...
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्मरहित निरोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पूजो हरषाई, पूजो हरषाई,
सिद्धगण पूजो हरषाई, चौंसठि गुणनामा विधि माला।
सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।
त्रिभुवन उपमा वास लखै, तुम पद-अम्बुज माई।।
निर्मल जल की धार देहु, अवशेष करण ताई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
जन्म-जरा-रोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

तुम पद अम्बुज वास लेन मनु, चन्दन मन भाई।
निज सों गुणाधिक्य संगति को, लहि मन हरषाई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधि माला, सुमरों सुखदाई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

क्षीरज धान सुवासित नीरज, कर सों छरलाई।
अंगुल से तंदुल सों पूजत, अक्षय पद पाई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधिमाला, सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धूलिसार छवि हरण विवर्जित, फूलमाल लाई।
काम-शूल निरमूल करण कों, पूजहूँ तुम पाई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधिमाला, सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूखागार अक्षीण रसी हू, पूरति है नांई।
चरू लाय तुम पद पूजत हों, पूरन शिवराई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधिमाला, सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

दीपनि प्रति तुम पद नित पूजत, शिव मारग दरशाई।
घोर अंध संसार हरण की, भली सूझ पाई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधिमाला, सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

कृष्णागरु कर्पूर पूर घट, अगनि से प्रजलाई।
उड़े धूम यह, उड़े किधों जर करमन की छाई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधिमाला, सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मधुर मनोग सु प्रासुक फल सों,पूजों शिवराई।
यथायोग्य विधि फल को दे गुण, फल की अधिकाई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधिमाला, सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

निरघ उपावन पावन वसुविधि, अर्घ हर्ष ठाई।
भेंट धरत तुम पद मैं पाऊँ, निर-आकुलताई।।
सिद्धगण पूजो हरषाई, सिद्धगण पूजो हरषाई।
चौंसठि गुणनामा विधिमाला, सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजो रे भाई।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टिगुणसहितश्रीसिद्धपरमेष्ठिने
सर्वसुखप्राप्तये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीतिका

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध-समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले।।
ते क्रमावर्त नसाय युगपत, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप हैं।।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय, चहुँ गुण गेह, द्यो हम शुभमती।।

ॐ ह्रीं अर्हतजिनादिसिद्धभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

तीर्थंकर त्रिभुवन धनी, जा पद करत प्रणाम।
हम किह मुख वर्णन करैं, तिन महिमा अभिराम।।

चौपाई

जय भवि-कुमुदन मोदन चंदा,जय दिनन्द त्रिभुवन अरविंदा।
भव-तप-हरण शरण रस-कूपा मद ज्वर जरन हरण घनरूपा।।
अकथित महिमा अमित अथाई, निर-उपमेय सरसता नांई।
भावलिंग बिन कर्म खिपाई, द्रव्यलिंग बिन शिव पद पाई।।

नय विभाग बिन वस्तु प्रमाणा, दया भाव बिन निज कल्याणा।
पंगु सुमेरु चूलिका परसै, गुंग गान आरम्भे स्वर सै।।
यों अजोग कारज नहीं होई, तुम गुण कथन कठिन है सोई।
सर्व जैन-शासन जिनमाहीं, भाग अनन्त धरै तुम नाहीं।।
गोखुर में नहीं सिंधु समावे, वायस लोक अन्त नहीं पावै।
तातैं केवल भक्ति भाव तुम, पावन करो अपावन उर हम।।
जे तुम यश निज मुख उच्चारैं, ते तिहुँ लोक सुजस विस्तारैं।
तुम गुणगान मात्र कर प्रानी, पावैं सुगुण महा सुखदानी।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिन चित ध्यान सलिल तुम धारा, ते मुनि तीरथ हैं निरधारा।
तुम गुण हंस तुम्हीं सरवासी, वचन जाल में लेत न फाँसी।।
जगत बंधु गुणसिंधु दयानिधि, बीजभूत कल्याण सर्वसिधि।
अक्षय शिव-स्वरूप श्रिय स्वामी, पूरण निजानन्द विश्रामी।।
शरणागत सर्वस्व सुहितकर, जन्म-मरण दुख आधि-व्याधि हर।
'संत' भक्ति तुम हो अनुरागी, निश्चै अजर अमर पद भागी।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिवलयोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः जयमालामहार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानन्द

जय जय सुख सागर, सुजस उजागर, गुणगणआगर, तारण हो।
जय संत उधारण विपति विडारण, सुख विस्तारण, कारण हो।।
तुम गुणगान परम फलदान, सो मंत्र प्रमान विधान करूँ।
जहरी कर्मनि वैरी की कहरी, असहैरी भव की व्याधि हरूँ।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु